

प्रारंभिक परीक्षा

सेंट्रल अमेरिकन इंटीग्रेशन सिस्टम (SICA)

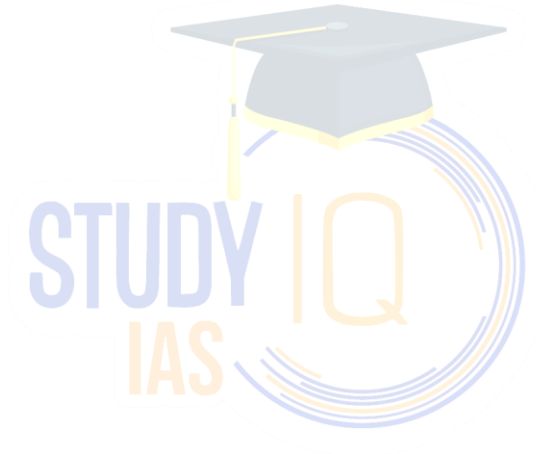
संदर्भ

विदेश मंत्रालय (MEA) ने भारत और SICA देशों के बीच एक वर्चुअल वार्ता का आयोजन किया।

सेंट्रल अमेरिकन इंटीग्रेशन सिस्टम (SICA) के बारे में -

- यह मध्य अमेरिकी इस्थमस क्षेत्र में एक संस्थागत क्षेत्रीय एकीकरण ढांचा है।
- लक्ष्य: मध्य अमेरिका क्षेत्र के इस्थमस को शांति, स्वतंत्रता, लोकतंत्र और विकास का क्षेत्र बनाना।
- स्थापना: दिसंबर 1991 में मध्य अमेरिकी राज्यों के संगठन चार्टर (ODECA) या तेगुसिगल्पा प्रोटोकॉल के प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर द्वारा।
- वर्तमान सदस्य: मध्य एशिया के 8 देश – कोस्टा रिका, अल साल्वाडोर, ग्वाटेमाला, होंडुरास, निकारागुआ, पनामा, बेलीज़, डोमिनिकन गणराज्य
- सचिवालय: अल साल्वाडोर।
- अध्यक्षता: SICA की अध्यक्षता हर छह महीने में बदलती रहती है।
- शिखर सम्मेलन: वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है।

स्रोत: [DD News](#)



आईएनएस तमाल

संदर्भ

भारतीय नौसेना 1 जुलाई 2025 को आईएनएस तमाल को नौसेना में शामिल करने वाली है।

आईएनएस तमाल के बारे में -

- यह क्रिवाक श्रेणी का एक स्टील्थ मल्टी-रोल फ्रिगेट है, जो पिछले दो दशकों में रूस से शामिल की गई श्रृंखला का हिस्सा है।
- यह तुषिल श्रेणी का दूसरा जहाज है, जो पहले के तलवार और तेग श्रेणी के फ्रिगेट (प्रत्येक में 3 जहाज हैं) का उन्नत संस्करण है।
- निर्मित: यंतर शिपयार्ड, कलिनिनग्राद (रूस)।
- इसमें 26% स्वदेशी घटक शामिल हैं, जिनमें शामिल हैं:
 - ब्रह्मोस लंबी दूरी की क्रूज मिसाइल (भूमि और समुद्री लक्ष्यों के लिए)।
- पूर्ववर्तियों की तुलना में उन्नत हथियार और प्रणालियाँ:
 - ऊर्ध्वाधर रूप से प्रक्षेपित सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें (वीएलएस एसएसएम)।
 - उन्नत 100 मिमी नौसैनिक तोप।
 - आधुनिक ईओ/आईआर लक्ष्यीकरण प्रणाली।
 - 30 मिमी क्लोज-इन हथियार प्रणाली (सीआईडब्ल्यूएस)।
 - हैवीवेट टॉरपीडो और पनडुब्बी रोधी रॉकेट प्रणाली।
 - उन्नत अग्नि नियंत्रण रडार और निगरानी प्रणाली।



स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

ब्लोआउट (Blowout)

संदर्भ

12 जून को असम के शिवसागर में एक ब्लोआउट हुआ, जिसके कारण अनियंत्रित गैस रिसाव हुआ।

ब्लोआउट क्या है?

- ब्लोआउट एक खतरनाक और अनियंत्रित तरीके से तेल या प्राकृतिक गैस का कुँए से बाहर निकलना है। यह तब होता है जब किसी गैस या तेल के कुँए में भूमिगत दबाव उसे रोकने के लिए बनाए गए उपकरणों से ज्यादा हो जाता है।
- यह कैसे होता है?
 - **ड्रिलिंग प्रक्रिया:** चट्टान के नीचे फंसी गैस तक पहुंचने के लिए श्रमिक धरती में ड्रिल करते हैं। वे दबाव को नियंत्रित करने के लिए ड्रिलिंग मड और ब्लोआउट प्रिवेंटर्स (वाल्व) का उपयोग करते हैं।
 - **दबाव का अधिक भार:** यदि दोषपूर्ण वाल्वों या गलत मड वेट गणना के कारण भूमिगत दबाव प्रणाली की क्षमता से अधिक तेजी से बढ़ता है, तो गैस बोर के माध्यम से ऊपर की ओर बढ़ती है।
 - **अनियंत्रित उत्सर्जन:** रेत, मिट्टी और कभी-कभी तेल के साथ मिश्रित गैस, सतह पर एक तीव्र जेट के रूप में बाहर निकलती है।
- यह खतरनाक क्यों है?
 - **प्राकृतिक गैस ज्वलनशील होती है** → यहां तक कि एक चिंगारी भी इसे प्रज्वलित कर सकती है, जिससे बड़ी आग या विस्फोट हो सकता है।
 - **लोगों और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है** → यह श्रमिकों को खतरे में डाल सकता है, हवा को प्रदूषित कर सकता है, और लोगों को खाली करने के लिए मजबूर कर सकता है।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकी सूचकांक

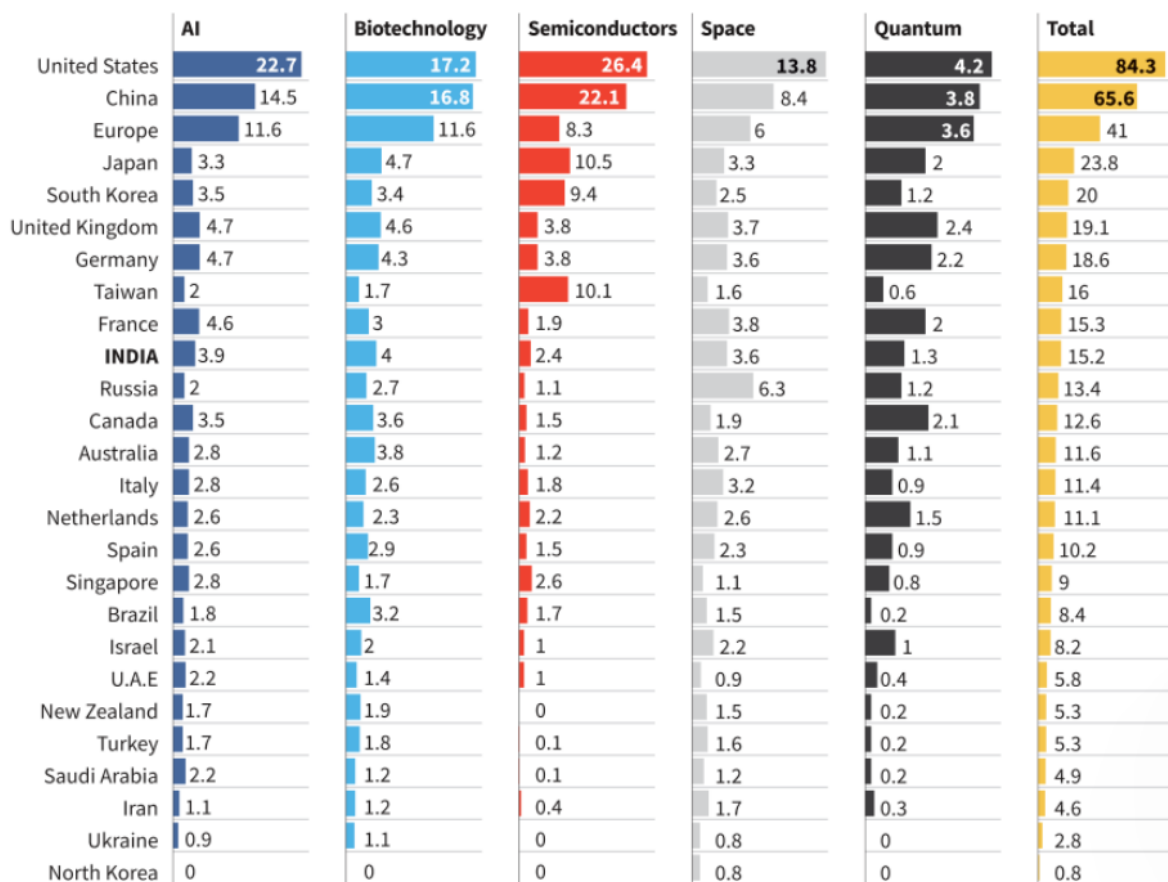
संदर्भ

हार्वर्ड द्वारा हाल ही में जारी महत्वपूर्ण एवं उभरती प्रौद्योगिकी सूचकांक में भारत 10वें स्थान पर है, जो दर्शाता है कि वह अमेरिका और चीन जैसी प्रमुख शक्तियों से पीछे है।

महत्वपूर्ण एवं उभरती प्रौद्योगिकी सूचकांक क्या है?

- हार्वर्ड केनेडी स्कूल - बेलफ़र सेंटर द्वारा शुरू किया गया एक वैश्विक सूचकांक।
- इसमें पांच प्रमुख प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में 25 देशों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया गया है:
 - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) – 25%
 - जैव प्रौद्योगिकी – 20%
 - सेमीकंडक्टर – 35%
 - अंतरिक्ष – 15%
 - क्वांटम टेक्नोलॉजी – 5%
- **उद्देश्य:** नीति निर्माताओं को महत्वपूर्ण तकनीकी क्षेत्रों में राष्ट्रों की ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद करना।
 - अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए सार्वजनिक और वाणिज्यिक डेटा को संयोजित करता है।
 - राष्ट्रीय शक्ति को छह मानदंडों का उपयोग करके मापा जाता है:
 - अनुसंधान
 - विकास
 - प्रतिभा
 - वाणिज्यिक क्षमता
 - भू-राजनीतिक उत्तोलन
 - दोहरे उपयोग की संभावना (नागरिक और सैन्य)
- **शीर्ष प्रदर्शन करने वाले देश:**
 - संयुक्त राज्य अमेरिका
 - चीन
 - यूरोप (एक गुट के रूप में)
 - जापान
 - दक्षिण कोरिया
 - भारत की स्थिति: 10वां स्थान

CHART 1: The chart assesses the national power of countries across key technology sectors such as Artificial Intelligence (AI), Biotechnology, Semiconductors, Space, and Quantum



स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

धीमी होती अर्थव्यवस्था में विस्तारवादी नीतियां

संदर्भ

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने लगातार दो बैठकों में प्रमुख ऋण दरों में कटौती की है, जो एक महत्वपूर्ण विस्तारवादी बदलाव का संकेत है।

2025 में RBI द्वारा ऋण दर में कटौती के उदाहरण:

- **अप्रैल 2025:** RBI ने रेपो दर में 25 आधार अंकों की कटौती की।
- **जून 2025:** 50 बीपीएस की अतिरिक्त कटौती की घोषणा की गई।
 - **वर्तमान रेपो दर: 5.5%**

भारत में विस्तारवादी नीति क्या है?

- विस्तारवादी नीति से तात्पर्य आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए राजकोषीय और मौद्रिक साधनों के उपयोग से है, खासकर जब अर्थव्यवस्था कम मांग, कम विकास या मंदी की प्रवृत्ति का सामना कर रही हो।
- प्रकार:
 - **विस्तारवादी मौद्रिक नीति (RBI):**
 - ✓ उधार लेने की लागत कम करने के लिए रेपो दरों में कमी लाना।
 - ✓ ऋण सस्ता करके निवेश और उपभोग को बढ़ावा देना।
 - ✓ बैंकिंग प्रणाली में तरलता बढ़ाना भी इसमें शामिल है।
 - **विस्तारवादी राजकोषीय नीति (सरकार):**
 - ✓ आयकर में कटौती (जैसा कि फरवरी 2025 में किया गया)।
 - ✓ समग्र मांग को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक व्यय में वृद्धि करना।
 - ✓ विशिष्ट क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहन/सब्सिडी प्रदान करना।

विस्तारवादी नीति के लाभ -

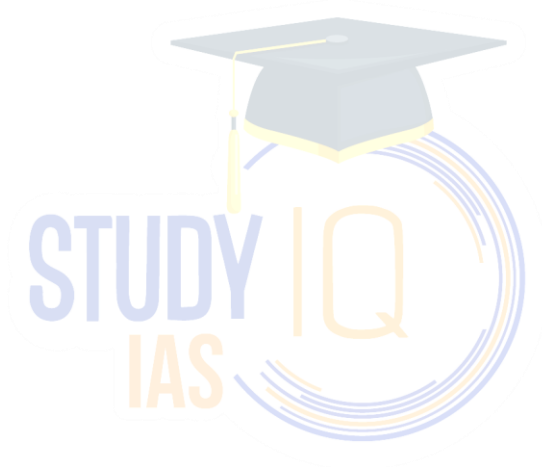
- **समग्र मांग को बढ़ावा:** कम ब्याज दरें और कर कटौती परिवारों तथा फर्मों को अधिक खर्च करने एवं निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- **निवेश गतिविधि को पुनर्जीवित करना:** निजी क्षेत्र, विशेष रूप से एमएसएमई को सस्ता ऋण प्राप्त करने और उत्पादन को पुनः आरंभ करने में मदद करता है।
- **बेरोजगारी कम होती है:** वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती मांग से श्रम की मांग बढ़ती है, जिससे बेरोजगारी कम होती है।
- **आर्थिक मंदी का प्रतिकार:** यह विशेष रूप से कम मुद्रास्फीति और कम ऋण वृद्धि (जैसे 2025 में) के दौरान आर्थिक गति को पुनर्जीवित करने के लिए उपयोगी है।
- **विकास अनुमानों का समर्थन:** जीडीपी वृद्धि को बनाए रखने या बढ़ाने का लक्ष्य (RBI वित्त वर्ष 2025-26 के लिए 6.5% की वृद्धि का अनुमान लगाता है)।

विस्तारवादी नीति के नुकसान और जोखिम -

- **मुद्रास्फीति दबाव:** मांग में वृद्धि से कीमतें बढ़ सकती हैं, खासकर यदि आपूर्ति आनुपातिक रूप से नहीं बढ़ती है।
 - RBI के लक्षित मुद्रास्फीति बैंड $4\% \pm 2\%$ को पार कर सकता है।
- **राजकोषीय घाटा बढ़ना:** कर कटौती से सकल घरेलू उत्पाद में आनुपातिक वृद्धि के बिना राजस्व में कमी आ सकती है, जिससे राजकोषीय घाटा बढ़ सकता है।
 - सरकार को व्यय में कटौती करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है, विशेषकर कल्याणकारी योजनाओं पर।

- **नीति समन्वय जोखिम:** यदि राजकोषीय और मौद्रिक दोनों नीतियां समन्वय के बिना विस्तारवादी हैं, तो यह व्यापक आर्थिक संतुलन को अस्थिर कर सकती है।
- **विलंबित प्रभाव:** मौद्रिक संकेतों के प्रसारण या राजकोषीय उपायों के कार्यान्वयन में विलंब के कारण परिणाम धीमे या असमान हो सकते हैं।
- **बाह्य परिस्थितियों पर निर्भरता:** वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियां (जैसे ट्रम्प के टैरिफ युद्ध, मध्य पूर्व संघर्ष) घरेलू नीतिगत लाभ को प्रभावित कर सकती हैं।
- **असमान लाभ:** विस्तारवादी नीतियों से कॉर्पोरेट और उच्च आय वर्ग को असमान रूप से लाभ हो सकता है, जबकि यदि सरकार राजस्व व्यय में कटौती करती है तो कमजोर वर्ग को नुकसान हो सकता है।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)



समाचार में शब्द

होर्मुज जलडमरूमध्य (Strait of Hormuz)



समाचार? ईरान की संसद ने अपने परमाणु प्रतिष्ठानों पर हाल ही में हुए अमेरिकी हमलों के जवाब में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद करने के लिए मतदान किया है।

होर्मुज जलडमरूमध्य के बारे में -

- यह ईरान (उत्तर) और अरब प्रायद्वीप, विशेष रूप से यूएई और मुसंदम (ओमान) (दक्षिण) के बीच एक संकीर्ण जलमार्ग है।
- यह फारस की खाड़ी (पश्चिम में) को ओमान की खाड़ी (पूर्व में) से जोड़ता है।
- जलडमरूमध्य में उल्लेखनीय द्वीपों में हेंगाम, होर्मुज और क्रिशम शामिल हैं।
- दुनिया की लगभग 30% तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) और वैश्विक तेल आपूर्ति का 25% प्रतिदिन जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है।

स्रोत: [IndianExpress](https://www.indianexpress.com)

संपादकीय सारांश

वैश्विक संकटों के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाना

संदर्भ

व्यापार युद्ध, टैरिफ समीक्षा और नए द्विपक्षीय सौदे वैश्विक वाणिज्य को नया आकार दे रहे हैं। निर्यात-उन्मुख भारत के लिए, यह उथल-पुथल एक निकट-अवधि का मुद्दा है और नई आपूर्ति-श्रृंखला भूगोल में खुद को बंद करने का अवसर भी है।

वैश्विक व्यापार की वर्तमान स्थिति -

- **व्यापार युद्धों का पुनरुत्थान:** विभिन्न देश, विशेष रूप से अमेरिका, सामरिक आयातों पर टैरिफ लगा रहे हैं या उनकी समीक्षा कर रहे हैं।
- **द्विपक्षीय व्यापार समझौतों (बीटीए) का प्रसार:** बहुपक्षवाद से मिनी सौदों और एफटीए की ओर बदलाव, जिससे व्यापार नियम अधिक विखंडित हो रहे हैं।
- **भू-राजनीतिक तनाव:** संघर्ष (जैसे, अमेरिका-चीन, मध्य पूर्व) आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित कर रहे हैं और शिपिंग लागत बढ़ा रहे हैं।
- **आपूर्ति श्रृंखला पुनर्गठन:** वैश्विक कंपनियां विनिर्माण आधार में विविधता लाने के लिए 'चीन +1' या 'फ्रेंड-शोरिंग' रणनीति अपना रही हैं।
- **भारत का व्यापार जोखिम:** अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है (वस्तु निर्यात का लगभग 20%)।
 - रत्न एवं आभूषण, फार्मा, ऑटो पार्ट्स, कपड़ा जैसे क्षेत्र अमेरिका पर अत्यधिक निर्भर हैं

यह एक समस्या क्यों हो सकती है?

- **टैरिफ व्यवस्था में अनिश्चितता:** अस्पष्ट अमेरिकी व्यापार नीति भारतीय निर्यातकों के लिए योजना और मूल्य निर्धारण में बाधा उत्पन्न करती है।
- **एमएसएमई के लिए खतरा:** टैरिफ वृद्धि से भारतीय निर्यात अव्यवहार्य हो सकता है, विशेष रूप से छोटी कंपनियों के लिए।
- **भारत में डंपिंग जोखिम:** चीन जैसे देश अतिरिक्त उत्पादन को भारत की ओर मोड़ सकते हैं, जिससे घरेलू उद्योगों को नुकसान पहुंच सकता है।
- **विलंबित निवेश एवं निर्यात आदेश:** अनिश्चित रिटर्न के कारण व्यवसाय पूंजी निवेश और ऑर्डर में देरी करते हैं।
- **कर कटौती के बावजूद निर्यात में धीमी वृद्धि:** आयकर कटौती से उपभोग में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई है, जिससे मांग प्रभावित हुई है।

भारत के लिए अवसर -

- **आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण:** भारत वैश्विक कंपनियों के लिए एक प्रमुख वैकल्पिक विनिर्माण आधार के रूप में उभर सकता है।
- **अमेरिकी बीटीए में प्रथम प्रस्तावक:** अमेरिका के साथ व्यापार समझौते का शीघ्र समापन प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान कर सकता है।
- **मजबूत सेवा क्षेत्र:** भारत का आईटी और डिजिटल निर्यात लचीला बना हुआ है और इसमें वृद्धि जारी है।
- **एफटीए नेटवर्क का विस्तार:** ब्रिटेन के साथ एफटीए संपन्न; यूरोपीय संघ और ऑस्ट्रेलिया के साथ वार्ता जारी।
- **वैश्विक एफडीआई को बढ़ावा देने की संभावना:** भारत चीन, वियतनाम आदि से आने वाली कंपनियों को आकर्षित कर सकता है।

स्रोत: [The Hindu](#)

खाद्य एवं उर्वरक सब्सिडी पर पुनर्विचार की आवश्यकता

संदर्भ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 वर्ष पूरे होने पर, भारत के व्यापक आर्थिक संकेतक महत्वपूर्ण वृद्धि और गरीबी में कमी दर्शाते हैं, फिर भी असमानता, सब्सिडी अकुशलता और पर्यावरणीय स्थिरता की चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन (2014-2025) -

- **नाममात्र जीडीपी वृद्धि:**
 - 2014: **\$2.04 ट्रिलियन**
 - 2025: **\$4.19 ट्रिलियन** (11 वर्षों में लगभग दोगुना)
- **पीपीपी आधारित जीडीपी विस्तार:**
 - 2004: **\$2.75 ट्रिलियन**
 - 2014: **\$6.45 ट्रिलियन**
 - 2025: **\$17.65 ट्रिलियन** (विश्व स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था)
- **पीपीपी के संदर्भ में प्रति व्यक्ति आय में सुधार:**
 - 2004: **\$2,424.2**
 - 2014: **\$4,935.5**
 - 2025: **\$12,131.8**
- **उल्लेखनीय गरीबी में कमी:** अत्यधिक गरीबी (3 डॉलर प्रतिदिन) 2011 में 27.1% से घटकर 2022 में 5.3% हो गई।
 - 2011-2022 के दौरान 4.20 डॉलर प्रतिदिन की दर से गरीबी 57.7% से घटकर 23.9% हो गई।
- **कृषि क्षेत्र लचीलापन:** औसत कृषि विकास (2015-2025): 4% प्रति वर्ष (पहले यूपीए के तहत 3.5%)।

लगातार समस्याएँ -

- **आय असमानता:** गिनी गुणांक स्थिर (~ 0.33-0.35), केवल मध्यम सुधार दिखा रहा है।
- **वैश्विक स्तर पर प्रति व्यक्ति आय निम्न:** प्रति व्यक्ति पीपीपी के संदर्भ में भारत जी-20 देशों में सबसे निचले स्थान पर है, जो श्रीलंका और भूटान से भी नीचे है।
- **सब्सिडी अकुशलताएं:** खाद्य सब्सिडी (2.03 लाख करोड़ रुपये) और उर्वरक सब्सिडी (1.56 लाख करोड़ रुपये) पर भारी व्यय, फिर भी महत्वपूर्ण रिसाव और अकुशलता का सामना करना पड़ रहा है।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएं:** उर्वरकों के असंतुलित उपयोग से मृदा, जल और वायु का क्षरण हो रहा है।
 - उर्वरक आयात पर बढ़ती निर्भरता।
- **पहचान संबंधी चुनौतियाँ:** काशतकारों की सही पहचान करने और उन्हें सहायता प्रदान करने में कठिनाई।

समस्याओं के समाधान के उपाय -

- **सब्सिडी का युक्तिकरण (खाद्य एवं उर्वरक):** मुफ्त अनाज वितरण से हटकर पौष्टिक खाद्य पदार्थों (दूध, दालें, अंडे) के लिए लक्षित डिजिटल खाद्य कूपन की ओर बदलाव।
 - उर्वरक सब्सिडी के स्थान पर डिजिटल उर्वरक कूपन लागू करना, संतुलित उर्वरक उपयोग और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना।
- **समावेशी विकास को बढ़ावा देना:** रोजगार सृजन के लिए सुधारों में तेजी लाना, विशेष रूप से ग्रामीण और अनौपचारिक क्षेत्रों में।
 - असमानता को कम करने के लिए सामाजिक बुनियादी ढांचे (स्वास्थ्य, शिक्षा) को बढ़ाना।
- **पर्यावरणीय स्थिरता:** पर्यावरण अनुकूल उत्पादों और विधियों में नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए उर्वरक बाजारों को विनियमन मुक्त करना।
 - लक्षित प्रोत्साहनों के माध्यम से जैविक और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना।

- **किसान पहचान में सुधार:** काश्तकारों की सटीक पहचान के लिए उन्नत डेटा त्रिकोणमिति का उपयोग करना।
 - नीति कार्यान्वयन से पहले किसानों का विश्वास जीतने के लिए व्यापक प्रयास।
- **राजनीतिक संचार:** सुचारू नीति परिवर्तन सुनिश्चित करने और जनता का विश्वास हासिल करने के लिए प्रधानमंत्री द्वारा मजबूत राजनीतिक नेतृत्व और प्रभावी संचार रणनीतियों का लाभ उठाना।

स्रोत: [Indian Express](#)



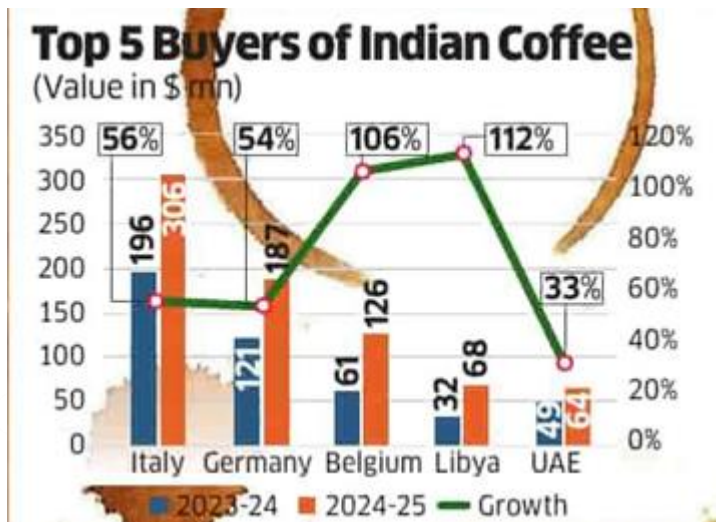
भारत का रोबस्टा बीन्स निर्यात

संदर्भ

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले 11 वर्षों में देश का कॉफी निर्यात लगभग 125% बढ़कर 1.8 बिलियन डॉलर हो गया है।

भारत में कॉफी बागान की यात्रा

- **उत्पत्ति (17वीं शताब्दी):** 1670 के आसपास बाबा बुदन द्वारा शुरू किया गया, जिन्होंने यमन से सात कॉफी के बीज की तस्करी की और उन्हें कर्नाटक के चिकमंगलूर की पहाड़ियों में लगाया।
- **ब्रिटिश विस्तार (19वीं शताब्दी):** ब्रिटिश बागान मालिकों ने कर्नाटक (विशेष रूप से कोडागु और चिकमंगलूर), तमिलनाडु (नीलगिरी) और केरल (वायनाड) में कॉफी की खेती का व्यवस्थित रूप से विस्तार किया।
- **स्वतंत्रता-पश्चात परिदृश्य (1950-1980 का दशक):** कॉफी बागान धीरे-धीरे अन्य दक्षिणी राज्यों तक फैल गए, जिससे भारत एक प्रमुख वैश्विक निर्यातक के रूप में स्थापित हो गया।
- **संकट और परिवर्तन (1990 का दशक):** व्हाइट स्टेम बोरर के भयंकर संक्रमण ने उच्च गुणवत्ता वाले अरेबिका कॉफी बागानों को नष्ट कर दिया, विशेष रूप से कर्नाटक में।
 - अरेबिका (उच्च गुणवत्ता, संवेदनशील, प्रीमियम मूल्य) से रोबस्टा (कठोर, कम कीमत) की ओर संक्रमण किया।
- **हालिया उछाल (2020 के बाद):** वैश्विक स्तर पर रोबस्टा कॉफी की कीमतों में उछाल आया, जो वैश्विक कमी के कारण हुआ, जिससे भारतीय कॉफी (विशेष रूप से कोडागु से) की स्थिति अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अनुकूल हो गई।
 - मामूली मात्रा में वृद्धि के बावजूद निर्यात रिकॉर्ड स्तर (वित्त वर्ष 2024-25 में 1.2 बिलियन डॉलर) पर पहुंच गया।



भारत में कॉफी बागान के प्रमुख क्षेत्र -

- **कर्नाटक (भारत की कॉफी का सबसे बड़ा उत्पादक ~70%):**
 - कोडागु (कुर्ग): रोबस्टा-प्रधान, सबसे बड़ा योगदानकर्ता।
 - चिकमंगलूर: पारंपरिक रूप से अरेबिका प्रधान, लेकिन तेजी से रोबस्टा की ओर स्थानांतरित हो रहा है।
 - हसन: अरेबिका और रोबस्टा का मिश्रित मिश्रण।
- **केरल: वायनाड (मुख्यतः रोबस्टा)।**
- **तमिलनाडु: नीलगिरी, यरकौड, शेवरॉय, पलानी पहाड़ियाँ (अधिकतर अरेबिका)।**
- **आंध्र प्रदेश: अराकू घाटी → उच्च गुणवत्ता, विशेष रूप से अरेबिका।**
- **पूर्वोत्तर भारत: असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैंड के कुछ हिस्से।**

कॉफी बागान के लिए आवश्यकताएँ -

- जलवायु:

- मध्यम वर्षा (150-250 सेमी/वर्ष).
- ठंडा से मध्यम तापमान (15-28°C).
- पाला रहित वातावरण
- उच्च आर्द्रता और धुंध वाली परिस्थितियाँ आदर्श हैं।
- **ऊँचाई:**
 - **अरेबिका:** अधिक ऊँचाई (समुद्र तल से 600-2200 मीटर ऊपर)।
 - **रोबस्टा:** निचली ऊँचाई (समुद्र तल से 300-800 मीटर ऊपर)।
- **मिट्टी:** कार्बनिक पदार्थ युक्त समृद्ध, अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी।
 - थोड़ा अम्लीय (पीएच 6.0 से 6.5 के आसपास)।
- **छाया एवं कैनोपी:** भारतीय कॉफी मुख्य रूप से छाया में उगाई जाती है, जिससे प्राकृतिक आवास का निर्माण होता है जो जैव विविधता और नमी को संरक्षित रखता है।
 - कटहल, सिल्वर ओक, सागौन और काली मिर्च जैसे पेड़ सामान्य छाया प्रदान करते हैं।
- **श्रम घनिष्ठ:**
 - मुख्य रूप से हाथ से चुना जाता है, जिससे उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित होती है।
 - श्रम लागत उत्पादन व्यय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (~ 60%) है।

हाल के रुझान और चुनौतियाँ -

- **कॉफी की किस्मों में बदलाव:** कभी 70% अरेबिका और 30% रोबस्टा का अनुपात अब उलट गया है। अब भारत दुनिया भर में प्रीमियम क्वालिटी रोबस्टा का निर्यात करता है।
- **श्रम की कमी:** उच्च मजदूरी, कल्याणकारी योजनाएं और शहरी प्रवास के कारण लगातार श्रम की कमी हो रही है।
- **पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं स्थिरता:** हाथी गलियारों पर वृक्षारोपण के अतिक्रमण के कारण हाथी-मानव संघर्ष।
 - भारतीय कॉफी की खेती की छाया-उगाई विधि, नए यूरोपीय संघ वन-कटान विनियमों (ईयूडीआर, दिसंबर 2025 से प्रभावी) के तहत भारत को लाभप्रद स्थिति में रखती है।
- **बाज़ार में अस्थिरता:** वैश्विक आपूर्ति में परिवर्तन के कारण हाल में मूल्य में उतार-चढ़ाव।
 - बेहतर मूल्य निर्धारण शक्ति का लाभ उठाने के लिए किसान-उत्पादक कंपनियों के गठन में वृद्धि।

भारतीय कॉफी बोर्ड -

- **स्थापना:** 1942 में कॉफ़ी अधिनियम 1942 के तहत।
- **मुख्यालय:** बेंगलुरु, कर्नाटक।
- **मंत्रालय:** वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार।
- **प्राथमिक कार्य:**
 - अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से कॉफ़ी उत्पादन को बढ़ावा देना।
 - गुणवत्ता आश्वासन और ग्रेडिंग।
 - विश्व स्तर पर भारतीय कॉफ़ी का प्रचार-प्रसार।
 - निर्यात सुविधा।
 - प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और सब्सिडी के माध्यम से उत्पादकों को सहायता प्रदान करना।
 - बाजार आसूचना और मूल्य जानकारी प्रदान करना।
- **हालिया पहल:**
 - स्थिरता प्रथाओं को प्रोत्साहित करना।
 - किसानों को लाभदायक रोबस्टा की ओर संक्रमण में सहायता करना।
 - जैविक, विशिष्ट और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन जैसे मूल्य-वर्धित कॉफ़ी को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष -

भारत के कॉफी उद्योग ने कई चरणों को पार किया है - प्रारंभिक उच्च-मूल्य वाली अरेबिका प्रभुत्व से लेकर, कीट-प्रेरित चुनौतियों के माध्यम से, रोबस्टा की वैश्विक मांग में वृद्धि का सफलतापूर्वक लाभ उठाने तक। कॉफी बोर्ड द्वारा रणनीतिक हस्तक्षेप, स्थिरता पहल और वैश्विक बाजार परिवर्तनों के लिए अनुकूलनशीलता आशाजनक है, हालांकि श्रम उपलब्धता आगे बढ़ने के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनी हुई है।

स्रोत: [Economic Times](#)

